समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०२५ ● वर्ष : २८ ● अंक : १२ (निरंतर अंक : ३३६) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

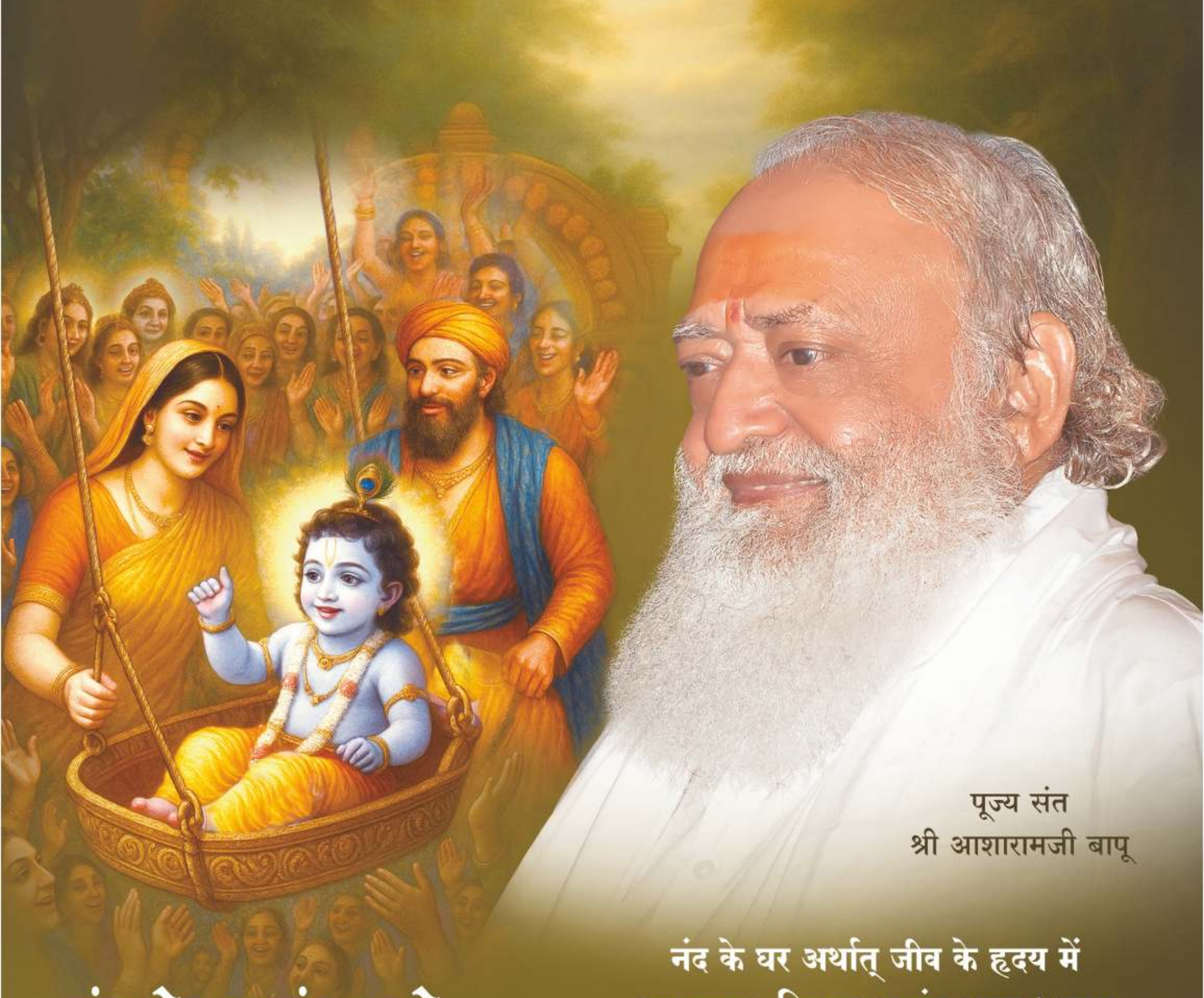

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

नंद घेर आनंद भयो,
जय कन्हैया लाल की...

नंद के घर अर्थात् जीव के हृदय में भगवद्रस, चिन्मय आनंद आया । हृदय में सच्चिदानंद का आनंद-स्वभाव प्रकट करने के लिए ही श्रीकृष्ण-अवतार और संत-सान्निध्य है । - पूज्य बापूजी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : १५ व १६ अगस्त ७

पूज्य बापूजी सनातन संस्कृति के प्रबल प्रहरी व पूरे विश्व की धरोहर हैं ।

- प्रसिद्ध समाजसेवक विशाल गुप्ता, अध्यक्ष, परहित चैरिटेबल ट्रस्ट १३

तनाव, चिंता रहित जीवन
हेतु पूज्य बापूजी के अनमोल सूत्र

“ यह तुम्हारे हाथ की बात है

कोई चाहे कैसा भी व्यवहार करे, दुःखी होना-न होना तुम्हारे हाथ की बात है, आसक्त होना-न होना तुम्हारे हाथ की बात है। तुमने क्या किया ? जो अपने अधिकार की चीज है वह दूसरों को दे दी, बड़े दाता बन गये ! बाहर की चीजें नहीं दीं, अपने हृदय को कैसे रखना यह तुम्हारे अधिकार की बात है लेकिन यह अधिकार तुमने दूसरों को दे दिया। 'फलाना आदमी ऐसा करे तो हमको सुख मिले, कोई निंदा न करे तो हम सुखी रहें। यह ऐसा हो जाय, वह वैसा हो जाय तो हम सुखी हो जायें।' तुमने अपने हृदय को जर्मन खिलौना बना दिया, कोई जैसे चाबी घुमाये ऐसे घूमना शुरू कर देते हो। लोग वाहवाही कर सकते हैं किंतु अहंकार करना-न करना तुम्हारे हाथ की बात है। लोग निंदा कर सकते हैं पर गुस्सा होना, भयभीत होना, चिढ़ना-न चिढ़ना तुम्हारे हाथ की बात है। मान लो, तुम्हारी निंदा किसी गलत कारण से हो रही है और तुम उसमें बिल्कुल शामिल नहीं हो तो लाखों-लाखों लोगों को समझाना तुम्हारे हाथ में नहीं है। पूरी दुनिया को चमड़े से ढकना तुम्हारे वश की बात नहीं है, अपने पैरों में जूते पहनकर काँटों से सुरक्षा कर लेना आसान है। ऐसे ही तुम महापुरुषों के जीवन से सीख लेकर समता में रहो। अपने से निंदनीय काम न हों, सावधान रहो, फिर भी निंदा होती है तो भगवान को धन्यवाद दो कि 'वाह प्रभु ! तेरी बड़ी कृपा है।'

तुम निंदनीय काम न करो फिर भी अगर निंदा हो जाती है तो घबराने की क्या जरूरत है ? तुम अच्छे काम करो, प्रशंसा होती है तो अच्छा काम जिसने करवाया उसको दे दो। बुरे काम हो गये तो प्रायश्चित करके रुको लेकिन जरा-जरा-सी बात में थरथराओ मत। संसार है, कभी दुःख आयेगा, कभी सुख आयेगा, कभी मान आयेगा तो कभी अपमान आयेगा, कभी यश आयेगा, कभी अपयश आयेगा। कभी बेटा कहना नहीं मानेगा, कभी पत्नी कहना नहीं मानेगी, कभी पति कहना मानेगा - कभी नहीं भी मानेगा। कभी पति की चलेगी, कभी पत्नी की चलेगी, कभी बेटे की चलेगी, कभी पड़ोसी के मन की होगी, कभी उस पार्टी की होगी, कभी इसकी होगी - इसीका नाम तो दुनिया है।

खून पसीना बहाता जा, तान के चादर सोता जा।
ये किश्ती तो हिलती जायेगी, तू हँसता जा या रोता जा ॥

रजि. समाचार पत्र

लोक कल्याण सेतु

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २८ अंक : १२

निरंतर अंक : ३३६ आवधिकता : मासिक

प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०२५ मूल्य : ₹ ४.५०

पृष्ठ संख्या : २८ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

सम्पर्क पता :

'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ६१२१०७३९

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $ ५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $ १२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

※ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ※

अनादि	DIGIANA DIVYA JYOTI	Asharamji Bapu	सेवाकार्य भी Asharamji Ashram	Mangalmay Digital
रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे	रोज रात्रि १० बजे	यूट्यूब चैनल्स		

※ 'अनादि' चैनल टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है। ※ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

लोक कल्याण सेतु ई-मैगजीन के रूप में भी पढ सकते है। ई-मैगजीन अथवा हार्ड कॉपी के सदस्य बनने के लिए क्लीक करो...

www.lokkalyansetu.org

लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष मनका योजना :

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

इस अंक में...

- **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का इतिहास और महत्त्व...**

कवर स्टोरी | १५ व १६ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी है। पूरे भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बहुत धूम-धाम से यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन व्रत, उपवास का बहुत महत्त्व है। इसकी महत्ता के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है... ७

- श्रीगुरु-वंदना......४
- प्राणघातक जाल में फँसा रही जुए की चाल !......९
- हर जीव का रुदन शांत करनेवाले भगवान ही जब रो पड़े...... ११
- सुर्खियों में...... १२
- जहाँ दवा काम न आये, वहाँ गुरुकृपा काम बनाये...... १३
- सत् अभ्यास करना क्यों जरूरी है ?......१४
- अपना कौन ? – संत पथिकजी......१५
- बच्चों को स्मार्ट फोन देना शराब या कोकेन देने के समान : विशेषज्ञ......१६
- निष्ठा से च्युत होने का नतीजा – स्वामी अखंडानंदजी......१८
- यह हिन्दुत्व के ऊपर कुठाराघात है – प्रसिद्ध समाजसेवक विशाल गुप्ता...... १९
- आनेवालीं पुण्यदायी तिथियाँ व योग...... २०
- सौंफ : स्वाद तो देती है, रोगों को भी हर लेती है...... २१
- ३ वृक्षों की कटाई पर ४ करोड़ का दंड !......२३
- चार प्रकार के भक्तों में से सर्वोत्तम कौन ?...... २५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम | **प्रकाशक :** राकेशसिंह आर. चंदेल | **मुद्रक :** विवेक सिंह चौहान | **प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) | **मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) - १७३०२५ | **सम्पादक :** रणवीर सिंह चौधरी

Email: lokkalyansetu@ashram.org, ashramindia@ashram.org Website: www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org

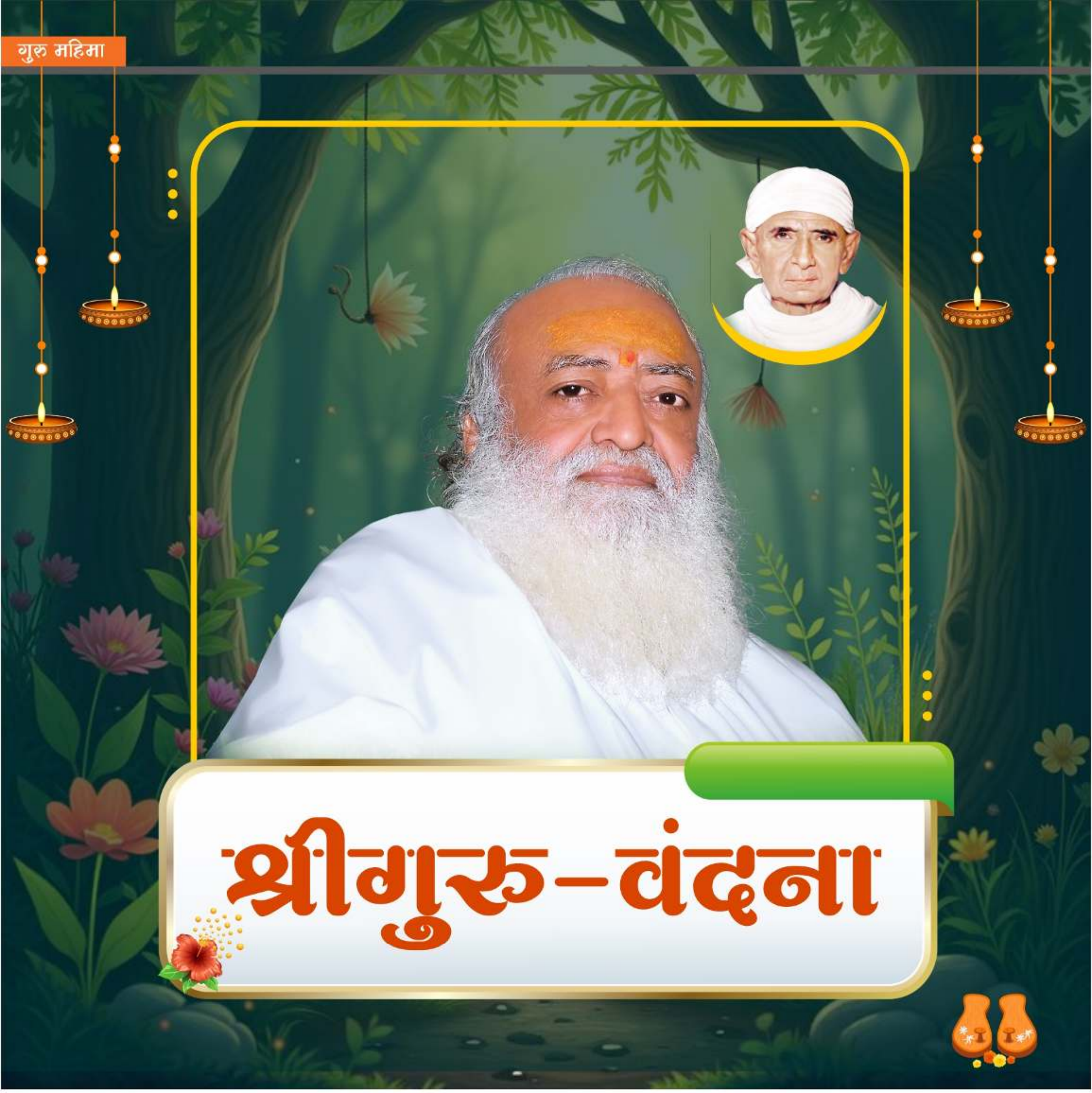

श्रीगुरु-वंदना

जय सद्‌गुरु देवन देव वरं,
निज भक्तन रक्षण देह धरं ।
पर दुःख हरं सुख शांति करं,
निरुपाधि निरामय दिव्य परं ॥१॥

'हे सद्‌गुरुदेव ! आपकी जय हो । आप देवों के देव हैं, सबसे श्रेष्ठ हैं । आपने अपने भक्तों के रक्षण हेतु पृथ्वी पर मानव-शरीर धारण किया है अर्थात् अवतार लिया है । परदुःख का हरण कर सुख-शांति का दान देनेवाले आप माया की उपाधियों से मुक्त, निरामय, दिव्य तथा त्रिगुण आदि से परे हो ।'

जय काल अबाधित शांतिमयं,
जन पोषक शोषक ताप त्रयं ।
भय भंजन देत परम अभयं,
मन रंजन भाविक भाव प्रियं ॥२॥

'हे गुरुदेव ! आप काल से अबाधित हैं,

भौतिक चीजें फीकी लगें और दूसरे के हित में लगें । जब चिन्मय सुख मिलता है इस जीव को अर्थात् लहर जब सागर बनती है तो अपना आपा सभी लहरों को दे देती है । ऐसे ही जीव जब ब्रह्मसुख में होता है तो अपनी योग्यता सभीके हित में लगा देता है । जैसे भगवान का सब कुछ दूसरों के मंगल के लिए है ऐसे ही भगवान को पाये हुए महापुरुषों का भी जीवन और स्वभाव सबके मंगल के लिए हो जाता है ।

....

१५ व १६ अगस्त को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी है। पूरे भारत में ही नहीं, विदेशों में भी बहुत धूम–धाम से यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन व्रत, उपवास का बहुत महत्त्व है। इसकी महत्ता के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग में आता है :

जैसे तरंग समुद्र में मिल गयी फिर चाहे तरंग होकर नाचे–कूदे तो कोई फर्क नहीं। वह अपने को पानी जानती है तो सागर है। ऐसे ही जीव अपने को ब्रह्म जानता है तो ब्रह्म है। तो यह जीवात्मा अपने को ब्रह्म जाने इसलिए आधिभौतिक लीला, आधिदैविक लीला और चिन्मय लीला होती है। भगवान श्रीकृष्ण का यह प्रेमावतार है। लौकिक व्यवहार भी है लेकिन लौकिक को लाँघकर अलौकिक और चिन्मय लीला भी श्रीकृष्ण के जीवन में देखी–सुनी–पायी जाती है। इसलिए श्रीकृष्ण को कहते हैं – **कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।**

प्राणघातक जाल में फँसा रही

जुए की चाल !

एक अध्ययन के अनुसार 'जुए की लत से पीड़ित हर पाँच में से एक व्यक्ति को आत्महत्या के विचार आते हैं। सभी प्रकार की लतों में जुए की लत से होनेवाली आत्महत्या की दर सबसे अधिक है।' जुए के दुष्प्रभावों का विश्लेषण करके विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं : 'जब हम जुए की लत के कारण मस्तिष्क में होनेवाले रासायनिक बदलावों को देखते हैं तो ये कोकेन के कारण होनेवाले बदलावों के समान पाये गये।

जुए की लत के शिकार हैदराबाद के ७ युवकों को हाल ही में आर्थिक नुकसान के कारण अपनी जान गँवानी पड़ी। इनमें से ६ युवकों ने आत्महत्या की और एक हत्या का शिकार हुआ।

इस संदर्भ में अमेरिका के ओहियो राज्य से भी चौंकानेवाले आँकड़े सामने आये हैं। एक अध्ययन के अनुसार 'जुए की लत से पीड़ित हर पाँच में से एक व्यक्ति को आत्महत्या के विचार आते हैं। सभी प्रकार की लतों में जुए की लत से होनेवाली आत्महत्या की दर सबसे अधिक है।'

जुए के दुष्प्रभावों का विश्लेषण करके विशेषज्ञ इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं : 'जब हम जुए की लत के कारण मस्तिष्क में होनेवाले रासायनिक बदलावों को देखते हैं तो ये कोकेन के कारण होनेवाले

सत् अभ्यास करना
क्यों जरूरी है ?

"दुनिया में ऐसा ही होता है इसलिए बाल्यकाल से ही बच्चों को सत् अभ्यास, सत् वृत्तियों की ओर प्रेरित करना चाहिए।"

- श्री आनंदमयी माँ

मानव-जीवन अत्यंत दुर्लभ और बहुमूल्य है। यह केवल खाने-पीने, कमाने और सांसारिक व्यवस्था में उलझकर बिताने के लिए नहीं मिला अपितु आत्मज्ञान, भक्ति और मोक्ष प्राप्ति हेतु मिला है । किंतु दुर्भाग्यवश अधिकांश लोग जीवनभर अपने सांसारिक कार्यों में ही इतने रमे रहते हैं कि उन्हें ईश्वर-स्मरण और जीवन के वास्तविक लक्ष्य का विचार तक नहीं आता।

श्री आनंदमयी माँ ने एक बार सत्संग में एक ऐसी ही कहानी सुनायी थी : एक थी बुढ़िया अम्मा। जाति से वह तेली थी। तेल का काम करना ही उसका कारोबार था। उम्र उसकी नब्बे के पार थी।

बचपन से ही उसने तेल बेचकर अपनी उम्र काटी। दुनिया में और दूसरे काम कभी उसने नहीं किये। करने की आवश्यकता भी उसे महसूस नहीं हुई।

आस-पड़ोस के लोग साल में दो-चार बार बाहर जाते थे तीर्थ-दर्शन करने या सत्संग में। जाने से पहले अनेक जन उससे मिलने आते थे और कहते थे : "अम्मा ! हम लोग तीर्थ-दर्शन

बच्चों को स्मार्ट फोन देना
शराब या कोकेन देने के समान
: विशेषज्ञ

अध्ययन में यह भी सामने आया कि 'स्मार्ट फोन किशोरों को अधिक आक्रामक बना रहे हैं और उन्हें वास्तविकता से दूर कर रहे हैं । बच्चा जितनी कम उम्र में स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करना शुरू करता है, भविष्य में मानसिक स्वास्थ्य-संबंधी समस्याओं की सम्भावना उतनी ही अधिक होती है ।'इस विषय की गम्भीरता को समझते हुए माइक्रोसॉफ्ट कम्पनी के सह-संस्थापक बिल गेट्स ने अपने बच्चों को १४ वर्ष तक स्मार्ट फोन का उपयोग नहीं करने दिया था ।

....

हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय संस्थान सैपियन लैब्स द्वारा एक वैज्ञानिक अध्ययन किया गया, जिसमें अधिकांश किशोरों ने यह स्वीकारा कि स्मार्ट फोन पर इंटरनेट का उपयोग करने से उन्हें निराशा, ग्लानि व चिंता के तथा अनचाहे विचित्र विचार आते हैं।

अध्ययन में यह भी सामने आया कि 'स्मार्ट फोन किशोरों को अधिक आक्रामक बना रहे हैं और उन्हें वास्तविकता से दूर कर रहे हैं। बच्चा जितनी कम उम्र में स्मार्ट फोन का इस्तेमाल करना शुरू करता है, भविष्य में मानसिक स्वास्थ्य-संबंधी समस्याओं की सम्भावना उतनी ही अधिक होती है।'

३ वृक्षों की कटाई पर
४ करोड़ का दंड !

अमेरिका जैसे भौतिकता से विकसित देश आज वृक्षों और पर्यावरण की महत्ता समझ रहे हैं। खेलकूद, शहरीकरण, औद्योगीकरण आदि के नाम पर जिन देशों में लाखों वृक्षों की बलि दी गयी, आज वहाँ के लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

हाल ही में अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को की एक अदालत ने एक व्यक्ति पर तीन वृक्षों की अवैध कटाई के लिए लगभग चार करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया। यह निर्णय दर्शाता है कि अमेरिका जैसे भौतिकता से विकसित देश आज वृक्षों और पर्यावरण की महत्ता समझ रहे हैं। खेलकूद, शहरीकरण, औद्योगीकरण आदि के नाम पर जिन देशों में लाखों वृक्षों की बलि दी गयी, आज वहाँ के लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

जलवायु असंतुलन, ग्लोबल वार्मिंग, सूखा, अकाल और अचानक बाढ़ जैसी आपदाएँ, भूमि-

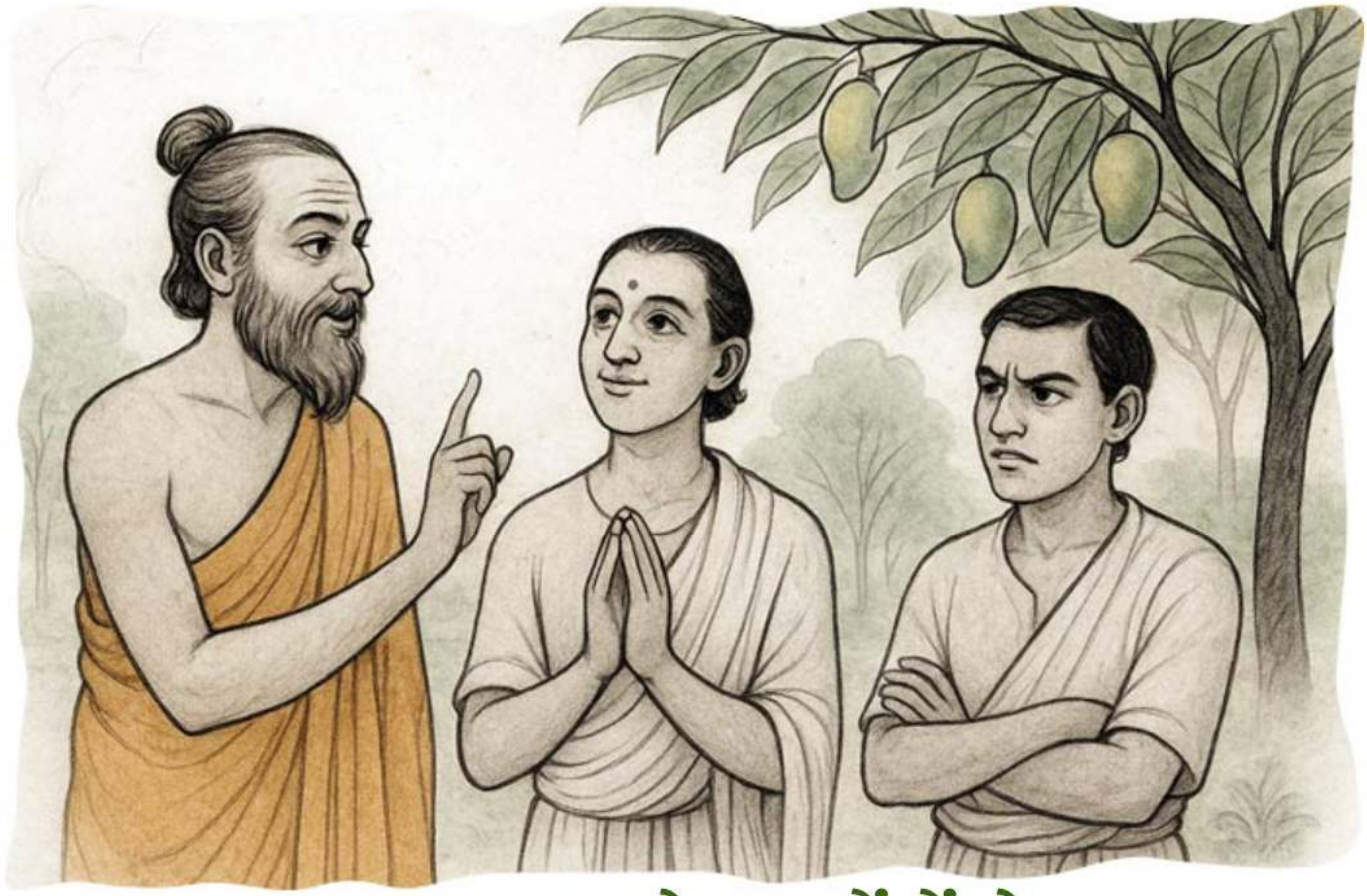

चार प्रकार के भक्तों में से

सर्वोत्तम कौन ?

- स्वामी अखंडानंदजी

(अंक : ३३४ का शेष)

भक्ति मनुष्य को महात्मा बना देती है, महान बना देती है। संसारी लोग जब संसार की वस्तुओं को चाहते हैं तो वे वस्तु को तो चाहते हैं किंतु यह ध्यान नहीं करते कि देनेवाला कौन है ? सेठ दे दे, राजा दे दे, पड़ोसी दे दे... कोई दे दे, उनको तो धन चाहिए। उनके ऊपर कोई तकलीफ है, उसको मिटा दे, चाहे कोई मिटा दे, तकलीफ मिटने से मतलब है। लेकिन भक्त का स्वभाव यह है कि वह तकलीफ तो मिटाना चाहता है, इसमें संदेह नहीं परंतु अपने प्रभु के हाथों तकलीफ मिटाना चाहता है। वह ज्ञान प्राप्त करना चाहता है किंतु प्रभु से ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। वह धन तो चाहता है परंतु केवल प्रभु से ही धन प्राप्त करना चाहता है। दूसरे के द्वारा मिटायी हुई तकलीफ उसको तकलीफदेह है, दूसरे के द्वारा प्राप्त हुआ धन उसके लिए दुःखपूर्ण है, दूसरे से प्राप्त हुआ ज्ञान उसको परमानंद नहीं देता है, उसको तो प्रभु के हाथों ही मिलना चाहिए, यह उसकी विशेषता है। और ज्ञानी की विशेषता यह है कि उसकी तकलीफ मिटे या न मिटे इसका कोई खयाल नहीं है और ज्ञान मिले यह उसके लिए अब प्रश्न ही नहीं है, धन मिले यह उसके लिए प्रश्न ही नहीं है... वह

नोटबुक रजिस्टर

कम मूल्य, उच्च गुणवत्ता व आकर्षक डिजाइन के साथ सुसंस्कारों का सिंचन

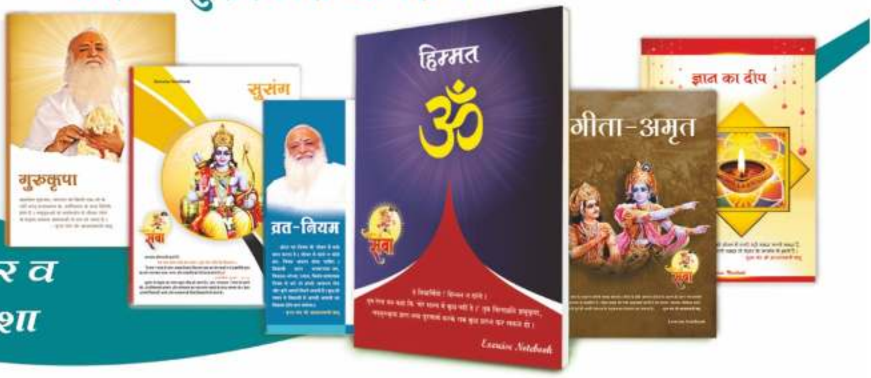

सुसंस्कार व सही दिशा

क्या है इनमें खास ?

✲ संयम, सदाचार, श्रद्धा, भक्ति, उद्यम, कर्तव्यपालन आदि सद्गुणों से जीवन को ओतप्रोत करनेवाले पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत ✲ हर पृष्ठ पर प्रेरणादायी सुवाक्य, जो विद्यार्थियों को आत्मविश्वास, माता-पिता व गुरुजनों के प्रति आदरभाव आदि सुसंस्कारों से भर दें ✲ मनोबल, बुद्धिबल व स्वास्थ्यबल बढ़ाने के सचोट उपाय ✲ एकाग्रता व स्मरणशक्ति बढ़ाने की कुंजियाँ ✲ परीक्षा में सफल होने के उपाय ✲ प्रसन्नता, उत्साह, आनंद व जीवनीशक्ति वर्धक प्राकृतिक दृश्य, तस्वीरें तथा सांस्कृतिक प्रतीक

नोटबुक	पृष्ठ सं.	सुपर डीलक्स	सिंदूर सीरीज	रजिस्टर	पृष्ठ सं.	सुपर डीलक्स	सिंदूर सीरीज
लाँग नोटबुक	९६	₹ २०	₹ १५	A4 लाँग रजिस्टर	९६	₹ ३०	₹ २५
लाँग नोटबुक	१२८	₹ २५	₹ २०	A4 लाँग रजिस्टर	१६०	₹ ४८	₹ ३५
लाँग नोटबुक	१७६*	₹ ३७.५	₹ २५	A4 लाँग रजिस्टर	१९६	₹ ६५	₹ ४५
लाँग नोटबुक	२४८	₹ ५०	—	A4 लाँग रजिस्टर	२९२	₹ ९०	₹ ६५

✲ 'लाँग नोटबुक १७६ पेज' 2 Line, 4 Line, Square, 3 in 1 व practical में भी उपलब्ध है ।
प्राप्ति हेतु सम्पर्क : (०७९) ६१२१०८३२/८८ अथवा स्कैन करें : ➡

योगी आयु तेल

नाक व कान के रोगों में

नाक और कान के रोगों में इसका उपयोग लाभदायी है । २-२ बूँद नाक में डालने से विषाणु-संक्रमण से सुरक्षा होती है ।

₹ १५
२० मि.ली.

कर्ण बिंदु

कान के लिए विशेष लाभदायी

यह कान का दर्द, उसमें सूजन व खुजली होना, कानों में सतत भनभनाहट की ध्वनि सुनाई देना (tinnitus) आदि समस्याओं में लाभकारी है । इसका उपयोग वृद्धावस्था तक श्रवणशक्ति को ठीक बनाये रखने में सहायक होता है ।

₹ २०
१० मि.ली.

गुलाब महक (गुलाबजल)

गर्मी-संबंधी तकलीफों में उपयोगी

✲ शीतलताप्रदायक, प्राकृतिक सौंदर्यप्रद व त्वचा के रंग को निखारनेवाला ।
✲ मुँहासों, त्वचा के लाल चकत्तों, आँखों के नीचे के काले घेरों तथा गर्मी के कारण होनेवाली फुंसियों को दूर करने में सहायक ।

₹ २५
१०० मि.ली.

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है । अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ९४२८८५७८२०. ई-मेल : contact@ashramestore.com

सच्चरित्रता, संयम और आत्मविकास, विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों की हैं पहचान खास !

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

तेज धूप से थके राहगीरों को शीतलता पहुँचाती शरबत व छाछ वितरण सेवा

लोक कल्याण सेतु सदस्यता सेवा का लाभ लेकर पाया स्पर्शित प्रसाद का मेवा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु ऋषि प्रसाद ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी